स्नातक कक्षा में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की मनोकामनाओं का तुलनात्मक अध्ययन

*डॉ0 ध्यानेन्द्र कुमार मिश्र **

किशोरावस्था में विद्यार्थी अपनी भविष्य की योजनाओं से निर्देशित होकर अपने शैक्षिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र को सुनिश्चित स्वरूप प्रदान करने हेतु प्रयत्नशील रहता है। ऐसी स्थिति में शिक्षकों और निर्देशन मनोवैज्ञानिकों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे विद्यार्थियों की अभिक्षमता, रूचि, अभिवृत्ति के साथ–साथ उनके मन में उद्भूत होने वाले विभिन्न शीलगुणों, मनोकामनाओं (Needs) आदि की जानकारी कर उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक, शैक्षिक एवं सामाजिक जीवन की समस्याओं की पहचान करें, जिससे विद्यार्थी इस अवस्था में उत्पन्न होने वाले अन्तर्द्वन्दों का समाधान करते हुये कुशलतापूर्वक अपने व्यवसाय का चयन कर सकें और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वस्थ समायोजन स्थापित कर सकें।

प्रस्तुत अध्ययन स्नातक कक्षा के विभिन्न शैक्षिक समूहों में अध्ययनरत उत्तर किशोरावस्था के छात्र–छात्राओं के मनोकामना प्रारूप का अध्ययन उनके पारिवारिक, शैक्षिक, स्वास्थ्यगत एवं सामाजिक परिसर (Press) के सन्दर्भ में किया गया है तथा यह जानने का प्रयास किया गया है, कि इन छात्र–छात्राओं की मनोकामनाओं में लिंगगत आधार पर कितनी समानता या भिन्नता है और उनकी कौन–कौन सी मनोकामनायें किस सीमा तक शिथिलतर, प्रबलतम, महत्वपूर्ण और महत्वहीन हैं।

उद्देश्य:

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्र–छात्राओं की मनोकामनाओं की तुलना करना।
2. स्नातक स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र–छात्राओं की मनोकामनाओं की तुलना करना।
3. स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की मनोकामनाओं की तुलना करना।

अध्ययन विधि:

प्रस्तुत अध्ययन में उपयुक्तता एवं सार्थकता की दृष्टि से वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयोग में लाया गया है।

न्यादर्श:

न्यादर्श के रूप में वाराणसी जनपद के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के स्नातक कक्षा के तृतीय वर्ष में अध्ययनरत कला, वाणिज्य तथा विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं को स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि के आधार पर चयनित किया गया। प्रतिदर्श हेतु चयनित संस्थाओं में ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्र की संस्थायें ली गईं। प्रतिदर्श की कुल संख्या 300 थी जिसमें तीनों शैक्षिक समूहों (कला, विज्ञान, वाणिज्य) की 100 छात्राओं तथा 100 छात्रों को सम्मिलित किया गया।

---

* प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में मनोविज्ञान शाला, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद द्वारा निर्मित "व्यक्तिगत समस्या सारिणी" का प्रयोग किया गया है।

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं द्वारा 24 मनोकामनाओं पर प्राप्त अंको के मध्यमान, मानक विचलनों की परिगणना कर तुलनात्मक समूहों के बीच उनमें अन्तर की सार्थकता जानने हेतु 'टी–मान' निकाला गया। तत्पश्चात .05 एवं .01 विश्वास स्तर पर उनके सार्थकता की जानकारी कर क्रमशः उन्हें तालिका संख्या 1, 2 तथा 3 में निम्नवत् प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

सारणी 1 स्नातक स्तर कक्षा के कला वर्ग के छात्र–छात्राओं की मनोकामनाओं के मध्यमानों में परस्पर अन्तर की सार्थकता का विवरण

क्र. सं.	मनोकामना	छात्र (60)		छात्रा (60)		टी–मान
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
1.	दैन्य	16.95	10.12	9.65	5.98	2.82**
2.	अर्जन	1.50	01.19	0.05	0.22	5.90**
3.	उपार्जन	0.6	00.75	0.05	0.22	2.98**
4.	सम्मिलन	2.10	01.99	0.08	0.89	2.83**
5.	आक्रामकता	1.35	00.88	0.85	0.88	1.81
6.	स्वत्व	2.75	01.86	1.85	1.15	1.71
7.	ज्ञानार्जन	0.35	00.49	0.25	0.44	0.81
8.	प्रतिकूलता	1.40	00.99	0.85	0.75	1.76
9.	प्रतिकार	0.75	00.72	0.15	0.37	3.27**
10.	प्रतिरक्षण	0.60	00.59	0.75	0.44	0.90
11.	थ्वनय	1.45	01.23	0.60	0.75	2.74**
12.	प्रभुत्व	2.85	01.81	1.15	0.75	3.57**
13.	प्रदर्शन	0.85	00.88	0.25	0.55	2.85**
14.	क्षति–परिहार	1.25	01.37	0.15	0.49	3.24**
15.	अन्तर्पीड़न	1.25	00.91	0.50	069	2.68**
16.	पोषण	2.3	01.30	1.95	1.09	0.91
17.	सुव्यवस्था	0.55	00.51	0.30	0.47	1.75
18.	निष्क्रियता	2.30	01.87	1.70	1.30	1.19
19.	क्रीड़ा	0.35	00.49	0.10	0.31	2.03*
20.	मान्यता	0.85	00.75	0.45	0.51	2.37
21.	परित्याग	1.10	01.02	0.20	0.52	3.11**
22.	एकान्तता	0.60	00.50	1.25	0.79	3.90**
23.	काम	2.75	01.94	1.30	1.17	2.90**
24.	परावलम्चन	4.90	06.25	2.15	1.04	1.95

**.01 विश्वास स्तर पर सार्थक, * .05 विश्वास स्तर पर सार्थक

सारणी–1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि कला वर्ग के छात्रों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रम से 'दैन्य', अर्जन, उपार्जन, सम्मिलन, प्रतिकार, विनय, प्रभुत्व, प्रदर्शन, परित्याग एवं काम की मनोकामनाओं पर कला वर्ग की छात्राओं की तुलना में अधिक पाया गया है। इतना ही नही बल्कि कलावर्ग के छात्रों एवं छात्राओं की इन उपर्युक्त सभी मनोकामनाओं में .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर भी प्राप्त हुआ।

इससे स्पष्ट है कि कला वर्ग के छात्रों की उपर्युक्त मनोकामनायें इसी वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा कहीं अधिक बलवती हैं। परन्तु इसी क्रम में एक महत्वपूर्ण परिणाम यह भी प्राप्त हुआ है कि एकान्तता की मनोकामना पर कला वर्ग की छात्राओं का मध्यमान एवं मानक विचलन इसी वर्ग के छात्रों की अपेक्षा अधिक है तथा .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर भी दृष्टिगत हुआ है। इससे यह स्पष्ट है कि कला वर्ग की छात्राओं में केवल 'एकान्तता' की मनोकामना उसी वर्ग के छात्रों की अपेक्षा अधिक बलवती होती है।

कला वर्ग के छात्रों में अन्तर्पीड़न एवं क्रीड़ा की मनोकामनायें कला वर्ग के छात्राओं की अपेक्षा अधिक बलवती होती है क्योंकि इन मनोकामनाओं पर प्राप्त 'टी' मान .05 विश्वास स्तर पर सार्थक है। शेष मनोकामनाओं पर कला वर्ग के छात्र–छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ। इस प्रकार तालिका में वर्णित प्रस्तुत अध्ययन की उपर्युक्त 24 मनोकामनाओं में से 13 मनोकामनाओं में किसी न किसी विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया है। इससे यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन की प्रथम परिकल्पना आंशिक रूप से ही स्वीकृत हुई है।

सारणी–2 स्नातक स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र–छात्राओं की मनोकामनाओं के मध्यमानों में परस्पर अन्तर की सार्थकता का विवरण

क्र. सं.	मनोकामना	छात्र (60)		छात्रा (60)		टी–मान
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
1.	दैन्य	13.15	6.52	7.85	3.20	3.19**
2.	अर्जन	00.85	0.59	0.15	3.67	4.77**
3.	उपार्जन	00.35	0.49	0.10	0.31	1.75
4.	सम्मिलन	01.05	0.95	0.50	0.69	1.99
5.	आक्रामकता	00.75	0.79	0.5	0.51	1.23
6.	प्रभुत्व	02.10	0.71	1.35	1.14	1.86
7.	अनार्जन	00.20	0.41	0.25	0.44	0.33
8.	प्रतिकूलता	00.85	0.81	0.20	0.41	2.94**
9.	प्रतिकार	00.20	0.41	0.05	0.22	1.83
10.	प्रतिरक्षण	00.65	0.49	0.15	0.37	4.36**
11.	विनय	00.95	1.05	0.20	0.41	2.88**

12.	प्रभुत्व	01.70	1.26	1.10	0.91	1.75
13.	प्रदर्शन	00.50	0.61	0.15	0.37	2.33*
14.	क्षति–परिहार	00.70	1.22	0.20	0.41	1.75
15.	अन्तर्पीड़न	00.60	0.68	0.45	0.51	0.90
16.	पोषण	02.15	0.93	1.10	1.25	3.28**
17.	सुव्यवस्था	00.50	0.76	0.00	0.00	2.94**
18.	निष्क्रियता	01.95	1.40	1.0	0.73	2.59
19.	क्रीड़ा	00.35	0.49	0.10	0.31	2.03*
20.	मान्यता	00.85	0.59	0.20	0.41	3.58**
21.	परित्याग	01.15	1.14	0.50	0.83	1.82
22.	एकान्तता	01.05	0.51	1.10	0.72	0.29
23.	काम	01.65	1.42	0.70	0.73	2.97**
24.	परावलम्बन	01.70	1.34	0.90	1.02	2.71**

** .01 विश्वास स्तर पर सार्थक, * .05 विश्वास स्तर पर सार्थक

सारणी–2 के विवेचन से स्पष्ट है कि वाणिज्य वर्ग के छात्रों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः दैन्य, अर्जन, प्रतिकूलता, विनय, पोषण, सुव्यवस्था, मान्यता, काम एवं परावलम्बन की मनोकामनाओं पर वाणिज्य वर्ग के ही छात्राओं की अपेक्षा अधिक होते हुये .01 विश्वासस्तर पर सार्थक अन्तर भी दृष्टिगत है। इस प्रकार वाणिज्य वर्ग के छात्रों की उपर्युक्त मनोकामनायें इसी वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा कहीं अधिक बलवती है। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा एवं प्रदर्शन की मनोकामनाओं पर भी वाणिज्य वर्ग के छात्रों का मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन इसी वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा कुछ अधिक होते हुये .05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर प्रकट करता है। इस प्रकार उपर्युक्त दोनों मनोकामनायें वाणिज्य वर्ग के छात्रों में इसी वर्ग के छात्राओं की अपेक्षा अधिक बलवती है। पंडित (1985) के अध्ययन से प्राप्त परिणाम भी प्रस्तुत परिणामों की बहुत हद तक पुष्टि करते है। इस प्रकार प्रथम परिकल्पना का यह पक्ष भी आंशिक रूप से स्वीकृत होता है।

सारणी–3 स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की मनोकामनाओं के मध्यमानों में परस्पर अन्तर की सार्थकता का विवरण

क्र.सं.	मनोकामना	छात्र (60)		छात्रा (60)		टी–मान
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
1.	दैन्य	15.60	8.38	10.35	5.68	2.35*
2.	अर्जन	01.30	1.22	00.55	0.89	2.21*
3.	उपार्जन	00.40	0.60	00.15	0.37	1.75
4.	सम्मिलन	01.65	1.57	00.95	1.05	1.52
5.	आक्रामकता	01.2	0.89	01.00	1.08	0.62
6.	स्वत्व	01.85	1.46	01.30	1.59	1.42

	ज्ञानार्जन	00.40	0.50	00.40	0.68	0.00
	प्रतिकूलता	0.70	0.80	00.55	0.69	0.57
	प्रतिकार	00.25	0.44	00.05	0.22	0.28
	प्रतिरक्षण	00.60	0.50	00.25	0.44	2.10*
10.	विनय	01.10	0.91	00.65	0.59	1.69
11.	प्रभुत्व	02.10	1.74	01.75	1.52	0.79
12.	प्रदर्शन	00.85	1.04	00.55	0.76	1.03
13.	क्षति–परिहार	00.70	0.87	0.55	0.76	0.68
14.	अन्तर्पीड़न	00.75	0.79	00.90	0.72	0.62
15.	पोषण	01.90	1.20	01.55	1.28	0.84
16.	सुव्यवस्था	00.25	0.55	00.35	0.59	0.70
17.	निष्क्रियता	02.55	1.67	01.50	1.28	2.06*
18.	क्रीड़ा	00.15	0.37	00.05	0.22	1.45
19.	मान्यता	00.65	0.67	00.40	0.50	1.42
20.	परित्याग	00.80	1.01	00.45	0.69	1.28
21.	एकान्तता	00.85	0.75	00.75	0.72	0.44
22	काम	01.55	1.79	00.95	1.10	1.20
23.	परावलम्बन	02.60	2.06	01.70	1.22	1.89
24.						

**.01 विश्वास स्तर पर सार्थक * .05 विश्वास स्तर पर सार्थक

सारणी–3 के विवेचन से ज्ञात होता है कि विज्ञान वर्ग के छात्र– छात्राओं में सार्थक अन्तर नहीं है क्योकि .01 विश्वासस्तर पर इस वर्ग के छात्र–छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है। केवल चार मनोकामनाओं क्रमशः दैन्य, अर्जन, प्रतिरक्षण एवं निष्क्रियता की मनोकामनाओं में .05 विश्वासस्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। शेष 20 मनोकामनाओं पर इस वर्ग के छात्र–छात्राओं में समरूपता एवं समानता पायी गयी। कौल (1974) के अध्ययन से प्रस्तुत अध्ययन की पुष्टि होती है। कौल (1974) के अध्ययन में भी किसी मनोकामना पर लिंगभेद नहीं प्राप्त हुआ है। उन्होंने उच्चबुद्धि स्तर एवं निम्न बुद्धि स्तर के किशोर–किशोरियों पर 'एडवर्ड पर्सनल प्रेफरेन्स सेड्यूल (ई0पी0पी0एस0)', 'भटनागर हिन्दी अनुशीलन के उपयोग' तथा 'जलोटा बुद्धि परीक्षण' के आधार पर पाया कि केवल दैन्य एवं सम्मिलन की मनोकामना में परस्पर कुछ अन्तर था। अर्जन, स्वत्व, आकामकता, क्षति–परिहार और काम की मनाकामनायें दोनों समूहों में समान रूप से पायी गयीं।

विभिन्न तलिकाओं एवं प्रदर्शित परिणामों के विवेचन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :

1. कला वर्ग के छात्रों में उसी वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा दैन्य अर्जन, उपार्जन, सम्मिलन, प्रतिकार, विनय, प्रभुत्व, प्रदर्शन, परित्याग एवं काम की मनाकामनायें अधिक बलवती हैं।
2. कला वर्ग की छात्राओं में एकान्तता की मनोकामना इसी वर्ग के छात्रों की अपेक्षा अधिक है।
3. वाणिज्य वर्ग के छात्रों में दैन्य, अर्जन, प्रतिकूलता, प्रतिरक्षण, विनय, पोषण सुव्यवस्था. मान्यता, काम एवं परावलम्बन की मनाकामनायें इस वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

4. विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं में दैन्य, अर्जन, प्रतिरक्षण एवं निष्क्रियता की मनोकामनाओं में अन्तर है।

प्राप्त परिणामों के समग्र विवेचन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि स्नातक कक्षा के विभिन्न शैक्षिक समूहों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की मनोकामनाओं में से केवल कुछ मनोकामनाओं में ही लिंगगत आधार पर अन्तर पाया गया है। यह भी निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि उपर्युक्त वर्णित जिन मनोकामनाओं में .05 तथा .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर है उनमें अधिकांश मनोकामनायें छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में ही बलवती हैं। केवल एक या दो मनोकामनायें ही छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में बलवती पायी गयी।

यह भी निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि अध्ययन हेतु प्रस्तावित 24 मनोकामनाओं में से अधिकांश मनोकामनायें छात्र–छात्राओं में समान रूप से विकसित होती पायी गयी हैं। अतः लिंगगत आधार पर उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ है। निष्कर्षतः अध्ययन की परिकल्पना आंशिक रूप से ही स्वीकार होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मनोविज्ञान शाला, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, (1986). चित्रकथानक परीक्षा, निर्देशिका, हिन्दी अनुशीलन, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिरषद, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।
- मिश्र, डी0के0 (2000). स्नातक कक्षा के विद्यार्थियों के विभिन्न शैक्षिक समूहों का मनोकामना प्रारूप : एक विभेदात्मक अध्ययन (अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध, शिक्षा संकाय, मा0गां0का0 विद्यापीठ, वाराणसी।)
- मिश्र, डी0के0 (2007). विभिन्न जातीय समूहों के विद्यार्थियों की मनोकामनाओं एवं शैक्षिक दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन(अप्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षा संकाय, मा0गां0का0 विद्यापीठ, वाराणसी।)
- शर्मा, डी0के0 (1993). माध्यमिक विद्यालयों में अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों की मनोकांक्षाओं का उनकी सामाजिक– आर्थिक प्रस्थिति के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित शोध प्रबंध) शिक्षा संकाय, का0हि0वि0वि0, वाराणसी।
- कौल,एल.(1974). डिफरेन्सेज इन नीड अफिलियेशन एण्ड नीड अवेसमण्ट एमंग एडोलसेन्ट्स ऐट हाई एण्ड लो लेवल्स आफ इन्टीलीजेन्स एण्ड सोसियो–इकोनामिक स्टेटस, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय।
- मरे, एच.ए.(1943), थिमैटिक एपरसेप्सन टेस्ट मैनुअल, हारवर्ड साइकोलाजिकल क्लिनिक, यू. एस.ए.।
- पंडित, आई.(1985) ए स्टडी आफ द साइकोलाजिकल नीड एण्ड सेल्फ कान्सेप्ट ऑफ एडोलसेन्ट्स एण्ड देयर वियरिंगस ऑन एडजेस्टमेण्ट्, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, मुम्बई विश्वविद्यालय।